

आश्विन मकरवादि

K Y

3807

ASHA ARCHIVES

नाम

॥ १ ॥

ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो धर्मा
म ॥ महर्षि विद्वज्जगत्क
पत्रमि न सूरसंघे स्थव्यमाना
जह्नु रत्ने रुक्मिणी ॥ समस्त
यदवासान्क मजो वज्रकनकम

जा व्यदे ज्यो

य ॥ ॐ नमो संधाय नमान
शो सा कर्त्ति ह्मूनि शो ॥ अ
ऊना धै ॥ कवल यदजन श
चि नन स्तु तर्ष ला क हि न स्तु ॥
म संतु ल य व ऊ द्वा ॥ पा नाल

॥ १ ॥

यत्तु जंगम दुष्टि मति कि जले भक्त सर्वा भ का ना ॥ कैलास मी विलास्य पुमृदि न हृदया य
च विद्या धन द्या ॥ शुभा द्वा ज रु नं मृनि वज्र वचनं रं गुमा या नि सर्व ॥ आ मां का सु श का
मा श्रु सृज सृज न ना सिद्धि गंधर्व नाग ॥ ऊ द्वा कृ ता जा कि न जि द्या गज द ह जि ह्वा ग कु व
आ दि द वा ॥ पूजा पंचाय चार्जे शि र व न न मि नं म द नि डु ल रु यं ॥ ॐ नमो क या ई वा च या मि
पु ल मि न मि न सा स्वं म हा या न सृ र्ग ॥ ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो धर्मा य ॥ ॐ न

ला

नाम

॥ २ ॥

मासं घायनमानमः ॥ ॐ नमो नमो मंजुनाथाय नमो नमः ॥ ॐ ॥ अथ वज्रधनं श्रीमान्दु
दानदमकपजः ॥ वेलाय विजयि विजयः ॥ गुरुजाट्कलियं गज ॥ १ ॥ विबुद्धपूदनीका
प्रास्तुलकमलानन ॥ पाल्तालयं वज्रवज्रन स्वकजनमूर्कमूर्क ॥ २ ॥ एकटिगजगप ॥ २ ॥
मूर्वेजलने वज्रपातिरि ॥ दुर्दानदमकविजे वीजविरुत्सपूदीरी ॥ ३ ॥ उल्लालयः
शीश्वकजि पुस्तुलवज्रकाटिहि ॥ पुष्पाय महाकनूला जगदर्थकर्त्रे पजे ॥ ४ ॥

हृदयगुल्फागये मूर्दिनेः काधविग्रहपिहि ॥ बूद्धकनू कर्त्रे नाथे सार्द्धपुनक्तविग्रहे ॥
॥ ५ ॥ पुलम्पनाथसंबुद्धं रगवक्त गथागर्ग कनाजलि पूगा रत्ना एकं कायस्त्रिगा ॥ ५
गुण ॥ ६ ॥ मूर्दिनाय ममार्थयः श्रुनूकं पायम्पविश ॥ मायाजालारि संवाधिय
थालारि रुवाम्पह ॥ ७ ॥ श्रुनूकं पंकमग्ननां कर्गव्याकूलं वगसा ॥ हिनाय सर्वसत्ता
नां मन्त्रुजलफय ॥ ८ ॥ प्रकाशयीगुसंबुद्धा रगवंशुला साताजगद्गु ॥ ९ ॥ महा

नाम ॥ समयगतसुखं बुद्ध्यासयवित्तम् ॥ ९ ॥ रतगवन् ज्ञानकायस्य महो ह्यस्यगीत्यम् ॥
 मरुशी ज्ञानसत्त्वस्य ज्ञानमूर्तिस्वयंरुव ॥ १० ॥ गतित्रार्थमूदात्रार्थमहात्रार्थमस
 ३ ॥ मागिमान ॥ आदिमध्यान्ककल्याणि नामसंगितिसुहृत् ॥ ११ ॥ यागिनं तापिनाव ३ ॥
 हे तापिष्येकं कनागना ॥ पुण्यसन्नाच्चसंबुद्धाया ताप्येकं पुनः पुनः ॥ १२ ॥ मायाजा
 लमहागुरु ॥ यावास्मिन्संप्रगीयते ॥ महावज्रधरे हृदये जपमये संकुक्षमिति ॥ १३ ॥

अहं चेनाध्याजयिष्यामि निर्यामि च दधाय ॥ यथा रतगवान्नाहं नाथ सर्वसंबुद्धगुरुं च
 क ॥ १४ ॥ पुकागमिष्यसत्त्वानां यथा गमयिष्यामि ॥ अरगवक्त्रं नागमुय अरग
 वा ज्ञानज्ञानम् ॥ १५ ॥ नवं सध्यायगुरुं कुरु वज्रपातित्वागनः ॥ कनाजलिपुगाह
 ताप्येकं कायस्ति नागगनः ॥ १६ ॥ अथ यथा ज्ञानगाथापाठग ॥ १७ ॥ अथ ताव
 मनि रतगवान् सर्वबुद्धादिपदाशुमः ॥ निर्हु मर्यायनालीना स्वजि ज्ञात्वमूलां कुरु ता

नामा

॥ १ ॥ स्मिन्संदग्धलाकारां मया यद्ययं गमधनः ॥ तैलाकलासकजर्हं चतुर्मात्राजि
सासनं ॥ २ ॥ शिलाकलायुत्रयस्यावस्त्रासध्वजमागिता ॥ प्रत्यक्षराषणगुह्यं वरुण
॥ ४ ॥ तिमहावली ॥ ३ ॥ साधुवरुणध्वजो मोनसाधुवरुणध्वजः ॥ यस्त्वजगदिनाथय
महाकन्यायान्तिना ॥ ४ ॥ महाभानानसंगिनि पविशामघनागनी सकृशी क
नकायस्यं कुण्डुसमद्यन ॥ ५ ॥ गत्साधुदगया म्पवः श्रुहकगुह्यकाधिपः ॥ ६ ॥

ज्ञान
॥ १ ॥ नृत्वं मकागमनास्तसाधुगवन्निनि ॥ ६ ॥ पुनिवचनगुह्यभाषण ॥ ७ ॥ अथसा
कमूनिगवान् सकलमनुकुलमहन् ॥ मन्तुविद्याध्वजं कुलं यवलाककुलं गुह्यः
॥ १ ॥ लाकालोककुलं कुलं लाकालोककुलं महन् ॥ महासेदाकुलवायः महासीपः
कुलं महन् ॥ २ ॥ षड्कुलावलाकनृगभाषण ॥ ३ ॥ ४ ॥ सापसमनुजाजानं संकका
मद्ययाऽया ॥ ५ ॥ नृत्वाधसलीगभाषणं स्वगिताम्यनं ॥ ६ ॥ १ ॥

नाम

॥ ६

॥ १ ॥ महासायाधजाविधान् महासाया र्थसाधक ॥ महासायाजगिजागा महासायदु
जालीक ॥ ८ ॥ महादान ॥ पुनिशु ॥ महागील धजागुली ॥ महाक्रान्तिधजाभीजा म
हाविर्यपत्राकुस ॥ ९ ॥ महाध्वनसमाधिषा महापुष्पगजिज्वक ॥ महावज्रमहा
पायप्रलीधीज्ञानसागर ॥ १० ॥ महाभैरी मया मया महाकाश्लिकागुधी ॥ महापुष्प
महाधीमान महापाय महाकृति ॥ ११ ॥ महाश्रुधिवलायगा महावर्गा महायव ॥ स

॥ ६

महद्विकामहगुध्या महावलपत्राकुस ॥ १२ ॥ महारवादि संतुर्ग महावज्रधजाद्य
न ॥ महाकुजा महाजोधा महारय रयंकज ॥ १३ ॥ महाविद्यामाना ॥ महासक्तुगु
पू ॥ महायान नयात्रुडा महायान नयाद्रुमः ॥ १४ ॥ बज्रध्वनमहासंउल्लेखीयाचतु
द्विग ॥ ॥ महावैराचना बुद्धा महाभौती महासूनि ॥ १५ ॥ महासंक्तुनयाद्रुग
महासक्तुनयालक ॥ १ ॥ दगपात्रमिगापाका दगपात्रमिगापुय ॥ दगपात्रमि

नाम

गायहृदयपात्रमिगनय ॥ २ ॥ दगहृमिध्वजा नाथ दगहृमिध्वगिहृदय ॥ दगः
ज्ञानविष्णुदासा दगज्ञानविष्णुध्वक ॥ ३ ॥ दगकात्रा दगध्वार्थ मृति दग
वजाविष्णु ॥ ४ ॥ अगध्वविष्णुध्वार्थ कजा दगकात्रावगीमहान् ॥ ५ ॥ अनादिनिष्पद्यं
नासा गुहासागधनात्मक हनवाटियथा वादि नथ कज्री अत्र नयवाक ॥ ६ ॥
अहया इहयवाटियहृदयकाटीव्यवस्ति ॥ ७ ॥ नेजास्पतिहृदि नादः कटिध्वमग

लीकज ॥ ८ ॥ सर्वगुं गममाद्यगतिः सध्वगन मना ऊव ॥ ९ ॥ जिनाजिनात्रविजयो चक्र
वर्तिमहाबल ॥ १० ॥ गीतमूरव्यागस्यार्था गरीशगसपनिर्वगी ॥ महानूरावा
वाधौजया अत्र नययामहानय ॥ ११ ॥ वागीश्ववाकगिवागी वाचस्पतिजनकगी ॥
सत्यवाकसत्यवाटियवच ॥ १२ ॥ अत्रैवर्तिका कृत्वागमी रवदु
प्रत्येकनायक ॥ १३ ॥ नानानिर्या नानिर्या नामहृदयककाजनः ॥ १४ ॥ अहस्तीक्ष्णगवा

नाम

८

हिङ्गुवी गजा गभजि गच्छिय ॥ कृमपा फाहय पाफ गीगिरुगा कनाविलः ॥ ११ ॥ विद्या
चजनसंपन्नः ॥ सुगगा ला कवित्यजः ॥ निममाजिजहं काज ॥ सत्यदयनयस्ति नः ॥ १२ ॥
संसाजपाजकरी स्तु कृमकृत्यस्तु जस्ति नः ॥ केवल्यं ज्ञाननिस्तु नपुञ्जशु फाविदाजन ॥ ८ ॥
॥ १३ ॥ सधर्मा धर्मजारास्वानला काला क कजः पज ॥ धर्मध्वजा धर्मजा जा-रगया
मार्गपदग क ॥ १४ ॥ सिद्धार्थसिद्धसंकल्प सर्वसंकल्पवर्जिनः ॥ निर्विकल्पा ऊ

या धनुः धर्मधनुः पजावया ॥ १५ ॥ पृथ्वान्मृत्संराजा ज्ञानं ज्ञाना कजस्मद्ग ॥
ज्ञानवासदग ज्ञानि सताना दयसंरुग ॥ १६ ॥ गभधगा विश्वजद्यागी ध्यानधया
धिया म्पगि ॥ पुण्या सवधा कचज पजमा धर्मा का यधक ॥ १७ ॥ पंचकाया सका वृ
द्धः पंचज्ञाना सको विरु ॥ पंचबुद्धा समकूट पंच-चक्रजसंग धक ॥ १८ ॥ ऊन
कः सर्व बुद्धानां बुद्धपुत्र पजावज ॥ प्रज्ञारवा रवा यानि धर्मयानि रवानक ॥

नाम

५२

॥ १९ ॥ घने कलाजा वजासा सधाजा गाजगसमी गगना हवः स्वयं ह ॥ पुज्ज
नाना महान् ॥ २० ॥ वेजावना महादीपि ज्ञान धामि विजावन ॥ जगत्पदिया
ज्ञानास्को महापुजापरास्वज ॥ २१ ॥ विद्याजाजा ग्रमने एम मनुजाजा महार्थक
॥ महा लोपा हने लोपा विश्वदगा विवयस्यमि ॥ २२ ॥ सर्वबुद्धात् महावा एम जग
दानन्दलावन ॥ विश्वत्रुपिविधगात्र पूजमान्ना महात्रुपि ॥ २३ ॥ कुलशयध

५३

जामे शो महासमयमनुंधक ॥ जलशयधज ॥ एम बुद्धिमान्ना हं मदगक ॥ २४ ॥
श्रमाद्यपा एम विजयी वजपा एम महाग्रह ॥ वजा कु एम महापा एम वज हं नवही
कज ॥ २५ ॥ सुविशुद्ध धर्म धारु ज्ञानमथा पंचविंगनी ॥ २६ ॥ कीधजा खन
स्कोही म ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
यमान्ना का विद्युजाजा वजव एम हयंकज ॥ विद्युश्रवजा हवज मायावजा महादज ॥

नाम

११

॥ वज्रं वरुणं महाकाशं गंगा द्वा वज्रं च न ॥ १ ॥ वज्रं जामा द्वा लंगनं वज्रं मे कवि
ग्रह ॥ वज्रं काटिनं खासं ती ॥ वज्रं सायनं कुवि ॥ ८ ॥ वज्रं साधु जं शीमानं वज्रं रु
जनं ह्येष न ॥ ९ ॥ शशं ह्येष न ॥ शिर्षं वज्रं धीष ॥ १० ॥ मं ह्येष मं ह्येष न ॥ ११ ॥
मुलाय कं कनका मं ह्येष न ॥ श्रुकागं धुपयं का ॥ धीषं धीषवतां वज्र ॥ १० ॥ श्रुदगं ह्येष
न गमं धाया दानं सा ह्येष न ॥ ११ ॥ गंधं गंधं न ज्ञास्य ॥ रक्तं काटीनं ज्ञास्य ॥ १२ ॥ गंधं गंधं

वादि वृषं ता गंती जा दानं गजं न ॥ १ ॥ धर्मं गंधं महागंधं ॥ धर्मं गंधं महागंधं ॥
श्रुपुगिस्ति गंधं निर्वानादगंधं धर्मं उंडुहि ॥ २ ॥ श्रुपुगंधं पवनं रग्ना नाना पुपा मना
मय ॥ सर्वपुपा वरा सगीजस्य पपुगंधं विस्वधक ॥ ३ ॥ श्रुपुधं रग्ना महासाख्यं ॥ धुधं धुधं
महं ध्वज ॥ तसूकि गायसां मस्का ॥ धर्मं कं तु महादम ॥ ४ ॥ श्रुलाय कं ककुमाजाऊ
॥ स्कुविजा वृद्ध ॥ पुजोपनि ॥ द्वाविं गजं उजं धज ॥ काकं श्रुलाय कं सुदज ॥ ५ ॥ ला

नाम

१२

कश्चनगुल्यार्थलाकार्याविगमजद ॥ नाथकुणागि लाकार ३ गत्रनं नायनिज
दुज ॥ ३ ॥ गगनालागसंहाग ३ सर्वदुःखनासागत्र ३ ॥ अविद्या दुःखगसंहाग
हवपंडजदात्रनः ॥ १ ॥ गमिनागवसंहाग ३ संसाजार्थवपात्रग ३ ॥ जनागिथक १२ ॥
मरुगा ३ सम्यक्बुद्धरूप ॥ ४ ॥ हि दुःखदुःखगमनस्थका ३ नककिमुकिग
॥ सर्वावत्रनविनिर्मुक्ता आकागसमगाङ्ग ॥ ५ ॥ सर्वदुःखमलानीनमुच्यते

नध्वगमिंगन ॥ सर्वसत्त्वमहानागगुल्यगवत्रगवत्र ॥ १० ॥ सर्वोपधिविनिर्मुक्ता
व्यामवत्सनिस्त्रिग ॥ महाचिन्तामतिधज ३ सर्वजलाहुमाविदु ॥ ११ ॥ महाक
त्यसुत्रुक्तीनामहादायटारुम ॥ सर्वसत्त्वार्थकृत्कुर्ताहेनेविसत्त्ववत्सज ॥ १२ ॥
सुहासुहं ३ काजदुःखसर्वदुःखसमयीविदुः ॥ सत्यंदि यक्षुवसदुःखविमुक्तिमुयकावि
द ॥ १३ ॥ गुलीगुलं क्षधर्मदुःखसत्तामंगल्यादय सर्वमंगलमागत्य ३ कीर्तिसत्ता

नाम

१३

यगः १७८ ॥ १४ ॥ महासर्व महाश्व सा महान् महाजनि ॥ सत्कात्र ४ सत्कृतिः
रुमि ४ प्रमादश्रीयुगन्तुमि ४ ॥ १५ ॥ वज्र २५५ वज्र २४२ गज ४ गज २५५ गुम ॥
महाहवाजिपुवजानि ४ गवहयनागज ४ ॥ १६ ॥ सिखेगित्वही ऊटिला ऊटिमी छीकि ॥ १३ ॥
जिदिमान् ॥ पञ्चानन पञ्चगित्व ४ पञ्चवीज कः १७ ॥ महावृगधजा मो जी वृम
वाजिबुगाहुम ४ ॥ महानयानपी नि ४ १८ ॥ वृकविद्याकः

१९ ॥ वृका वृकनिर्वाह माफवान् मुकि मा ऊवि मा ऊ ग ॥ विमृकि गान् गगिव ॥ १९ ॥
निर्वाहनिर्वाह ४ गान् ४ शिथानि र्यानमनुक ४ सख दुःखार्थ कनिष्ठा ४ वैजग्यमपधी
ऊय ४ ॥ २० ॥ अऊथा इन्द्रमा ५५ कनिजा तासानि जऊन ४ ॥ निक्कलसर्व गान्मापि
गृष्ठावि ऊमनाथुम ॥ २१ ॥ अलजाविल जाविमला वाक्कदापनिजामयः ॥ सप्रवृ
वाविबृवात्मा सर्व ४ सर्वविलज ४ ॥ २२ ॥ विज्ञानधर्म गानी गान्ज्ञानमद्ययूप

नाम

१४

धक ॥ निर्विकल्पा निलाहागल्ल चसंबुद्ध काय कुरु ॥ २३ ॥ अनादिनिधना बुद्धा अ
दिबुद्ध निजल्लय ॥ अत्रिकच कुजमला इति मूर्धिसुभा गुण ॥ २४ ॥ वागीश्वरा म
हावादि वादिजा द्वादि पूजव ॥ वेदना स्वजा वलिहो वादिसिंहा पजा जीन ॥ २५ ॥ स १४ ॥
मगदगिपामा घक्क जमालि सुदगन ॥ श्रीवल्लसप्रसादोपि ॥ शार्वा स्वज कन धूमि ॥ २६ ॥
महाविषवज ॥ य ४ ॥ गल्ल हर्षा निजल्लय ॥ अगव शेषक न ४ ॥ कंग व्याधि महाजि पू

॥ २७ ॥ उलाक्क गीजकं ४ कान् ४ श्रीमान्द्रुमधुल ॥ दगदिह्मा मापर्याना धर्म धज
महाकुय ॥ २८ ॥ जगकुशे कविपुल्ला मे शो कज्जनमंजुल ॥ पमन सुश्रुत ४ श्रीमान् जल
कुशो महाविह ॥ २९ ॥ सर्वबुद्ध महाजाजा ॥ सर्वबुद्धा स्मरावधक ॥ सर्वबुद्ध महायाग स
र्वबुद्धे कलासन ॥ ३० ॥ वज्रजल्लारिथ कथा ४ सर्वजलाधिप्यवज ॥ सर्वलाक्क श्रवप
मि ४ सर्ववज्रधजाधिप ॥ ३१ ॥ सर्वबुद्ध महाचिह्नु ४ सर्वबुद्ध मनागमि ॥ सर्वबुद्ध महा

काम सर्वबुद्धसत्त्वनि ॥ ३२ ॥ वज्रसूर्या महालोका वज्रइन्दिमलप्रह ॥ विजाग्नीदिम
हाराग्नविश्ववर्ष्म जलप्रह ॥ ३३ ॥ सर्वबुद्धा वज्रपर्यंकवृद्धसंगीगी धर्मधक ॥ बुद्धपद्मा
रुव ४थीमानुसर्वइ ज्ञानकाग धक ॥ ३४ ॥ विश्वमायाधराजजा बुद्धविद्याधरा महान्
॥ वज्रगी कुमहारवजा विगुह ४पत्रमाकुज ॥ ३५ ॥ उत्पकुदमहायाना वज्रधर्ममहायु
ध ४ ॥ जिनजी हजगमहीया वज्रबुद्धियथार्थविग् ॥ ३६ ॥ सर्वपात्रमिगापूत्रि सर्वहमि

विहृषय ४॥ विष्णुश्च धर्मनेत्रास्मः सम्यग्ज्ञाननुहृत्परः॥ ३१॥ मायाज्ञानमहाधाम ४
सर्वगन्ताधिपः पञ्च ४॥ अग्रेष्वप्युपर्यकाः त्रिः १॥ गणेशानकायः धृक्॥ ३२॥ समन्तर
द्वयमणिः ४॥ द्विगिगणेशजगद्गुणिसर्वबुद्धमहागङ्गाः विश्वनिर्वानचक्रधृक्॥ ३३॥ सर्वेश
वस्वरावागः ४॥ सर्वेशवस्वरावधृक्॥ अनृत्यादधर्मविश्वार्थः ४॥ सर्वधर्मस्वरावधृक् ४
॥ ४०॥ शुक्रदत्तमहाप्राज्ञः ४॥ सर्वधर्माववाधधृक्॥ सर्वधर्मोपशमयाः रूपात्म

नाम

१६

त्रिजगधी ॥ ४१ ॥ किमिदं सप्रसन्ननात्मा सम्यक्बुद्धवाचिधक ॥ प्रत्यवदु सर्वबुद्धानां
ज्ञानार्थि ॥ सप्रसा स्वज ॥ ४२ ॥ प्रत्यवदु सज्ञानगथा द्वावस्त्रात्रिंशत् ॥ ४३ ॥ ॐ
साथं ॥ साधक ॥ पत्र ॥ सर्वपापविधेधक ॥ सर्वसत्त्वानामानार्थ सर्वसत्त्वार्थमाधक ॥ ४४ ॥
॥ १ ॥ कृगसंगमसर्जक ॥ श्रुज्ञानत्रिपुद्वयं ॥ ४५ ॥ धी ॥ गत ॥ धनधीमान् ॥ वीजवीर
स्त्रपधक ॥ २ ॥ वारुदधुसगाद्धप ॥ पयनि ॥ कृपनर्तुन ॥ ४६ ॥ शीमत्कृत् ॥ गृहजाला ॥ गमः

गगनाद्गगनर्तुनः ॥ ३ ॥ नुकपादगजाकाका महीमधुलनलस्त्रिंशत् ॥ वक्ता नृगिरव
जाकाक ॥ पादांगुष्ठनखस्त्रिंशत् ॥ ४ ॥ नुकार्थद्वयधर्माथ ॥ पत्रमाथविद्यन ॥ वज्र ॥
नानाविद्भिर्जपार्थ ॥ विदुर्विज्ञानसक्तानि ॥ ५ ॥ श्रुगपरावार्थजनि ॥ सत्यगात्रनिज
गधी ॥ रुवजागम्यनिन ॥ रुवहुयमहाजनि ॥ ६ ॥ गुह ॥ गु ॥ श्रुधवज्र ॥ गजयन्त्रक
गुपरावासाक मधुलकाया ॥ महाजागनरवपुत्र ॥ ७ ॥ ॐ नृनीलाग्रसचीजा ॥ महा

नाम

१७

नीलकचाग्रधरः ॥ महासतिमयवृक्षीवृद्धनिर्मानरूपतः ॥ ८ ॥ लोकधनुगनाकं
पी. नृपिपालमहाकुसुमः ॥ महास्मृतिधनसुगुणवृक्षगुणिसमाधिज्ञानः ॥ ९ ॥ वा
॥ १० ॥ सर्वसत्त्वमहासंग्रहगुणायमः ॥ सर्वसत्त्वमनाज्ञानः सर्वसत्त्वमना
नाऊवः ॥ ११ ॥ सर्वसत्त्वद्वितीयार्थः ॥ सर्वसत्त्वमनाज्ञानः ॥ पंचस्कंधार्थनत्वरु ॥ पंच
निःसंग

स्कंधविसृद्धधरः ॥ १२ ॥ सर्वनिर्यासकारिणः ॥ सर्वनिर्यासकारविदः ॥ सर्वनिर्यास
मागस्तुः सर्वनिर्यासदण्डकः ॥ १३ ॥ द्वादशांगरुवापागा ॥ द्वादशाकारसुद्धधरः ॥
चतुःसंयनया कालाश्रयज्ञानाववाधधरः ॥ १४ ॥ द्वादशाकारसंयार्थः ॥ द्वादशाकार
जगत्सविन् ॥ विंगत्या कालसंवाधिविदुः सर्ववित्पुत्रः ॥ १५ ॥ अमयवृद्धनिर्मासः ॥
कायकाटिविहावकः ॥ सर्वरुनाहिसमयः ॥ सर्वविदुः ॥ १६ ॥ नानाया

नाम

१८

ननयापायजगदर्थविहावक ४ सर्व कृत्ता हो समया ४ सर्वविशुद्धार्थविगं यानगो
नयनिर्याम ४ उक यानरुल्लिख ४ ११ ॥ कृगभगुविशुद्धात्मा कर्मभगुद्धयंक
प्र ॥ उधादधीसमशोक्त यागका नाजनि ४ गं ॥ १८ ॥ कृगभयं कृगसे कृग ४ स
पुहिनसवासन ४ ॥ पुकापायमहा करुण श्रमायजगदर्थकृ ॥ १९ ॥ सर्वसंज्ञप
हीना ॥ विज्ञानात्मानि जाधधक ॥ सर्वसत्त्वमनाविषय सर्वसत्त्वमनागति ॥ २० ॥

१८

सर्वसत्त्वमनागल्लसविर्हसमनांगन ४ ॥ सर्वसत्त्वाज्ञादिसर्वसत्त्वमनाजय ॥ २१ ॥ सि
द्धांकाविशुमापगन ४ सर्वताकिविवर्जित ४ ॥ निसंदिग्धमनिभुधसर्वार्थगिगुल
त्मक ॥ २२ ॥ पंचस्कंधार्थगिक्काज ४ सर्वकुलविहावक ४ ॥ उककुलारिसंबुद्धसर्व
बुद्धस्वतावधक ॥ २३ ॥ अनंगकायकायागु ४ कायकाटिविहावक ४ ॥ अगवचप
संदर्गाजिस्लककुमहामसि ४ ॥ २४ ॥ समगाज्ञानगधगुर्विगति ॥ २५ ॥ सर्वस

नाम

१९

बहुवाध्या बहुवाधिननुज ॥ अनऊजामनुयानिमलमकुंकलशय ॥ १ ॥
सर्वसंगार्थनका महाविनुजनऊज ॥ पंचाऊजामहासन्ध्याविनुशुन्यगगाऊज ॥
॥ २ ॥ सर्वकाजनिलाकाज ॥ दगाहोद वीरुधक ॥ अकल ॥ कलसगीनव
उर्थध्यानकाटिधक ॥ ३ ॥ सर्वध्यानकलारि ॥ समाधि कलरागुविः ॥ स
माधिकायकाया ॥ ४ ॥ सर्वसंगकायजान ॥ ४ ॥ निर्मानकायकाया ॥ ५ ॥

निर्मासर्वगंधक ॥ दगादिविधनिर्मानयथावजगदर्थक ॥ ५ ॥ दवाकिदवद
बहु ॥ सजंददानवाधिय ॥ अमजनुसजगु ॥ प्रमर्थ ॥ प्रमथग्वनः ॥ ६ ॥ उशीर्ष
रवकाकाजजकगाकुजगऊज ॥ प्रयान्नदगादिलक ॥ धर्मदानपुमिर्महान ॥ ७ ॥
मैगोसन्नाहसन्नद कजुसावेसवस्मिग ॥ पुस्तखर्जधनुर्वा ॥ ८ ॥ कृगज्ञानाजनऊज
॥ ९ ॥ माजजीमाजजीबीजयगुमाजयानक ॥ सर्वमाजयमऊर्गीसंबुद्धाली

॥ २ ॥ ब्रह्मस्मिन् नमस्तुभ्यं ब्रह्मज्ञानमो नमः ॥ ब्रह्मवाचनमस्तु ब्रह्मरावनमा
 नाम नमः ॥ ३ ॥ श्रुवाह्वानमास्तु नमस्तु ब्रह्मसंरुवः ॥ गगनरुवनमस्तु नमः
 ॥ २१ ॥ मस्तुज्ञानसंरुवः ॥ ४ ॥ मायाज्ञानमास्तु नमस्तु ब्रह्मनाटकः ॥ नमस्तु सर्वसं
 रूपाः ज्ञानकायनमास्तु नमिः ॥ ५ ॥ पंचगथागर्भं नमिः ॥ ६ ॥ ॐ स
 र्वधर्मा रावस्वराव विष्णु हवः श्रु श्रु श्रुः पु कृ मि प जि णु हः सर्वधर्मा यद न सर्व
 वं

गथागुणज्ञानकायमंरुथापजिष्ठु द्विनामपादायनिः ॥ श्रु श्रु ४ सर्वगथागन रुदयज्ञ
 हन रुद्रां रुगवन ज्ञानमुरुवागी खन मज्ञवाच सर्वधर्मा गगलसलसूपाजिष्ठु ह
 र्मधं रुज्ञानगर्भं श्रु ४ ॥ मंरुविन्याग ४ ॥ ६ ॥ अथ वज्रधजणीमान रुद्रगुल क
 गांजीसि ४ ॥ पुसम्यनाथसंरुद्रगवनं गथागर्भं ॥ १ ॥ श्रु श्रु श्रु वरु वि धे नार्थ गुह
 देवजपातिरि ॥ संसाह का धजाजाने ४ प्रावाच च जिदं वज्र ॥ २ ॥ श्रु मादासह

नाम

॥ २२ ॥

माधःसाधुमाधुःसुखापिण्डः॥ कृणास्माकं महानार्थः सम्यक् ब्रह्मपापकः॥ ३ ॥ ज
गन्मयस्य त्रयस्य त्रिमुक्तिरूपस्य काञ्चनः॥ गुणमा र्गविषुदायं मायाजालानया
दिभिः॥ ४ ॥ गंलीनादानवेषुत्यामहा र्थाङ्गगदर्थकः॥ ब्रह्मज्ञानविषया रुष संस्यः॥ २२ ॥
सं ब्रह्मदगि नृहृदि॥ ५ ॥ उपसंज्ञनगमथपंच॥ ॥ ॥ आर्यमायाजालाधुतगः
साहगिकायं महायागनंकाः पाणि समाधिजालपनलातः श्रीगमममूनिरापिण्डः

भगवत्पाथग

योसौ धर्मसुगतं गदितं पठन्ने भक्ति भावान्मात्रहीनं कथमापि पदं पाद गाथा
क्षरं वा॥ जिह्वा दोषैः पवन चरितैः श्लेष्म दोष प्रचारै र्युयं बुद्धाः स्वभवनगता
बोधिसत्त्वाः क्षम ध्वं॥ ॥ अनेन पुण्ये न च दोष हीनं नित्यं सिधे वै ससुखो
दयं च नमोस्तु बुद्धाय अनन्त गोचराय नमोस्तुते सत्य प्रका मुने॥ सत्य प्रति
ष्ठाय प्रजा च मोक्षसे सर्वे च कामाः सफला भवन्तु॥ ॥ मनो वांछा सर्व सिद्धि रस्तु॥ ॥

नामसे अक्षये

नाम

रुगवनामं कृणीकनसस्वस्यपत्रमार्थनामसंगीनिषजिसमाफा ॥ ॐ ॥ यध ॥

मर्माहगुपरावाकगुर्गवाकथंगनद्ववदगुवाधयात्रिनाधुवम्वादिमडागुवर्त ॥ १ ॥

संस्वग १०४५ मि आसिनवदि ४२८ गन ७ नाऊवसोषूहथानामसंगीनि दवजाणि ॥ २३ ॥

याकाय पुंन्यजाऊंवायाकलसूरंमं ४ ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ गुरुऊं ॥ ॥

अमरकवि

KY

3807